ऋतु-प्रिया



श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'



कवि



"कौलिकतेँ वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, रुचिएँ कवि एवं साधने पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक—श्री अमरजीक परिचय एक वाक्यमे येह देल जा सकैछ।"

—श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन

ऋतु-प्रिया

प्रकृति वर्णनात्मक सत्रह कविताक संग्रह

'हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि' द्वारा पुरस्कृत

—श्री चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"

नव रत्न ग्रन्थमालाक तेरहम पुष्प



प्रथम संस्करण

१००० प्रति

एक टाका पचीस नवका पाइ



प्राप्ति स्थान

एम० एल० एकेडमी

लहेरियासराय,

दरभंगा



प्रकाशक : नव रत्न गोष्ठी

मुद्रक—श्री निर्भय राघव मिश्र

नव भारत प्रेस (लहेरियासराय)

श्री चन्द्रनाथ मिश्र (अमर : बतहू)—

जन्म जेष्ठ कृष्ण पड़ीव १९२५ ई० ;

जन्म भूमि—खोजपुर, आवास—मिश्र टोला दरभंगा।

मुख्य शिक्षा—संस्कृत व्याकरण।

जीविका—१९४५ ई० सँ अध्यापन।

विधा—कविता, कथा, निबन्ध, एकांकी, रेडियो रूपक, संस्मरण, उपन्यास, हास्य-व्यंग्य, लोक-गीत, नृत्य-गीत।

सम्पादन कार्य :—

त्रैमासिक :—मै० सा० परिषद् पत्रिका।

मासिक :–वैदेही, इजोत।

पाक्षिक :—वैदेही (मैथिली)।

साप्ताहिक :—निर्माण (हिन्दी)।

दैनिक :—स्वदेश—मैथिली,।

प्रकाशित पोथी :—गुदगुदी, युगचक्र (कविता)।

उपन्यास :—वीर-कन्या, बिदागरी।

विविध :—त्रिफला, समाधान।

निबन्ध :—

मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण ।

सम्पादित पोथी :—

विद्यापति के देश मे

मैथिली साहित्यालोक ।

पद्य-प्रसून, शान्ति-दर्शन; हिमकण, आदि ।

अग्रिम प्रकाशन :—

कथा संग्रह :—

शीशे की छांह—(हिन्दी) ।

कन्तू भाइक 'क'—(मैथिली) ।

असली मुखिया :—एकांकी, (हिन्दी)

जीवन-संगीत (कविता, हिन्दी) ।

मातृभाषाक' अनन्य अनुरागी

उदार चेता

श्रीमान् कृष्णानन्दन सिंहजी

क

कर-कमल मे

सादर-समर्पित

शीर्षक		पृष्ठ
अषाढ़ १	...	३३
,, २	...	३६
साओन	...	३८
भादब	...	४१
आसिन	...	४४
कातिक	...	४६
अगहन १	...	४९
२	...	५१
३	...	५३
४	...	५५
५	...	५६
पूस	...	५७
माघ	...	६०
फागुन	...	६४
चौत	...	६९
बौशाख	...	७३
जेठ	...	७७



प्रस्तुत संकलन तथा.....

प्रस्तुत कविता संग्रहकेँ मातृभाषानुरागी लोकनिक हाथ धरिँ पहुँचबैत एहि प्रसङ्ग किछु कहब हम आवश्यक नहि बुझैत छी। कारण ई जे मैथिलीक अध्यापनो आब विगत पचीस वर्ष सँ अपना प्रदेश मे भऽ रहल अछि। आब स्वतः साहित्यिक कृति सभक मूल्यांकन करब आरम्भ भऽ चुकल अछि। एकरो हम युगक आकांक्षा मानैत छी। अपन आकांक्षाक पूर्तिक हेतु मनुष्य की कऽ सकैत अछि तकर तँ ज्वलन्त उदाहरण आइ रूसी अन्तरिक्ष मानव गेगारिन ओ अमरीकी अन्तरिक्ष मानव शेपर्ड संसारक आँखिक सोझाँ छथिहे ।

वर्त्तमान समय मे कविताक मूल्यांकन करैत नवीन-दृष्टि ओ नवीन-पद्धति रखनिहार आलोचक विशेष रूपें कविक आभ्यन्तर-जीवनक ओहि स्थिति विशेषक परिचय प्राप्त करब आवश्यक बुझऽ लागल छथि, जाहि भाव-भूमि पर बैसि, कवि आलोच्य कविताक रचना कैने रहैत छथि।

राजनीतिक क्षेत्र मे काज कैनिहार अधिकतर व्यक्ति जखन विधायक अथवा संसद सदस्य बनबाक अभिलाषा सँ जन-साधरणक सम्पर्क मे जाइत छथि, अपन सम्पर्क बढ़बऽ चाहैत छथि तँ अपन त्याग, अपन तपस्या, अपन बलिदान, अपन सेवा अपन योग्यता एवं अपन कर्मठताक (विषद) विशद व्याख्या करैत आत्म प्रशंसाक पूल बान्हि जाइत छथि—

"अपन प्रशंसा अपने मुँह सँ द्वारि द्वारि पर कैने घूरथि जकर जेहन छइ चालि तकर सङ टुकदुम टुकदुम तहिना पूरथि बैसल बगुली केर टका कें पाँचक आइ पचास करइ छथि"

से बगुलीक पॉचकें पचास बनैबाक अभिलाषी साहित्यकारो एहि रोगक रोगी भऽ रहलाह अछि।

किन्तु एकरा हम आत्म-प्रवंचना अथवा दम्भ मानैत छी जे हमरा संस्कारक विरुद्ध पड़ैत अछि।

तथापि कर्मक्षेत्र मे हमर की स्थिति रहल अछि, ताहि पर संक्षेप मे प्रकाश दऽ देबऽ पड़बे करत।

भावना वा कल्पना-लोक मे विचरण करैत क्षणिक मानसिक भावावेग केँ हम कविता नहिं मानैत छी, भने कवि के कोनो क्षणक कोनो भावावेग एक दृष्टि प्रदान कऽ जाइनि, जकरा आलोक मे ओ कविता पूर्ण भऽजाइत अछि! कविता रसोद्रेक करैत छैक, ओ क्षणिक आवेगक वस्तु भइए ने सकैत अछि, ओ चिन्तनक वस्तु थीक, मन्थनक वस्तु थीक!

तहिना व्यावहारिकता सँ दूर, जीवन सँ सर्वथा असावधान अल्हड़, निपरवाहि लोककेँ—जेना किछु बननिहार कृत्रिम कवि अपन परिचय दैत छथि—हम कविओ मानक हेतु प्रस्तुत नहि छी। कवि चिन्तक होइत छथि, हुनकर अपन जीवन-दर्शन एवं चिन्तन-पद्धति होइत छैनि। ओ असावधान रहिए ने सकैत छथि। हँऽ तन्मयताक स्थिति मे किछु क्षण यदि बाह्य जगत् सँ अन्तर्जगत् मे जाय सुधि बिसरि जाइत छथि तँ से भिन्न बात थीक। एहि मे वर्णित विषय तँ पुरान अवश्य अछि, वैदिक युग मे अभीष्ट लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु जखन मन्त्र द्रष्टा लोकनि उपासना करय लगलाह तँ कहलथिन--

"शतं जीवेम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
शतमदीना स्याम शरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात्"

प्रतिक्षण परिवर्तनशील प्रकृति केँ सब भिन्न भिन्न दृष्टिएँ देखैत आयल अछि। तेँ कदाच हमरहु दृष्टि मे कोनो मौलिकता आबि गेल हो, से कोनो आश्चर्य नहि।

एकर विषय-वस्तु बड़ पुरान अछि आ जीवनक हेतु चिर परिचित। सृष्टिक आदिए सँ मनुष्यक चतुर्दिक प्रकृतिक कटु-मधु रूपक आवरण घेड़ने रहलैक अछि। अतः जखन कखनो कविक कंठ सँ लय-युक्त गान स्फुट भेलनि, हृदयक भाव स्वरमय भऽ बाहर भेलनि, तँ ओहि मे प्रकृतिक वन्दना निहित छलैक। वैदिकऋचाक उद्गाता लोकनि जखन उषा सुन्दरीक सौन्दर्य सँ विभोर भऽ उठलाह तँ ओकर चित्रण विभिन्न रूप मे कैलन्हि कखनो कुमारि कन्या, कखनो गृहिणी, कखनो माता आ कखनो प्रतिदिनुक घटमान घटनाक रूपमे। मनुष्यक हृदय मे प्रकृतिक प्रति श्रद्धा, भक्ति ओ भय, ममता ओ स्नेह सभ रहैत छैक। अतः सहृदय संवेद्य काव्य मे ओहि प्रकृतिक विभिन्न अंग ओ परिस्थिति कें उपादानक रूप मे आचार्य लोकनि स्थान देलथिन। यैह कारण थीक जे संस्कृत महाकाव्य मे प्रकृति-चित्रण अत्यावश्यक बुझल जाइत अछि। संस्कृतक नाटक-कार ओ महाकवि लोकनि सतत प्रकृति सँ अपेक्षा जोड़ने रह-लाह अछि। प्रकृतिक सहृदयता-पूर्ण चित्रण मे कालिदास अद्वितीय छथि। शकुन्तलाक बिदाकाल मे तपोवनक लता-वल्ली सभ अपन पत्र-निपातक छल सँ अश्रुपात कऽ रहल छल—

उद्गलित दर्भकवलामृग्यः परित्यक्त नर्त्तना मयूरी
अपसृत पाण्डु पत्राः मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।

एहि प्रकारक दृष्टि परवर्त्ती कालक साहित्यकार मे अल्पे

देखना जाइत अछि। साधारणतः संभोग ओ विप्रलम्भ शृंगारक उद्दीपनक रूप मे प्रकृति-चित्रण रूढ़ भऽ गेल। चन्द्रमा ओ मलयानिल, वसन्त ओ वर्षा प्रेमी प्रेमिकाक सम्मिलन आकांक्षा कें उत्कट रूपें उद्दीप्त कऽ दैछ, अतः आतुर भावनाक चित्रण मे प्रकृति बड़ सहायक रहलैक। ओकर सौन्दर्य स्वतन्त्र काव्य-विषय भऽ सकैछ, ई दृष्टिए गौण भऽ गेल। यद्यपि मुक्तक रूप मे, ऋतु-वर्णनक रूप मे प्रकृति-चित्रण होइत रहल अवश्य, कालिदासक 'ऋतु संहार' एही प्रकारक काव्य अछि। यदि कवि समय-प्रसिद्धि ओ रूढ़िए पर आधारित नहि रहि, पर्यवेक्षण कें अधिक सजग राखि, एहन काव्य रचना करितथि तँ ओकर महत्व अधिक होइतैक। किन्तु से भेल नहि। छिटफुट नवीनताक समावेश रहितो अधिक ठाम वर्णन मे काव्यगत रूढ़िएक परिपालन होइत रहल। वस्तुतः प्रकृति थीक पर्यवेक्षणक वस्तु, जकरा बिना ओकर चित्रण मे मौलिकता नहि आबि सकैछ। महाकाव्य मे चित्रणक हेतु संध्या, रजनी, प्रातः, चन्द्र, सूर्य, ऋतु आदि विभिन्न प्रकारक चित्रणक विधान अछि। विशेषतः भिन्न-भिन्न ऋतुक वर्णन कोनो ने कोनो ब्याजें कैले जाइत छल!

भारतीय शास्त्र मे ऋतुक संख्या छौ छैक—वर्षा, शरत्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त ओ ग्रीष्म। सूर्यक चतुर्दिक् भ्रमण

करैत पृथ्वी पर सूर्यक विभिन्न दूरीक प्रभावें परिवर्तन होइत रहैत छैक। प्रकृतिक एहि परिवर्तन मे एक प्रकारक लय ओ यति रहैत छैक। ग्रीष्मक समाप्ति होइत छैक आकाश मे उमड़ैत श्यामल-श्यामल मेघ राशिक आगमन सँ, किन्तु शरद् ऋतुक आगमन सँ वर्षाक मेघाच्छन्न आकाश स्वच्छ भऽ जाइत छैक आ ओकर नीलनिभ स्वरूप दृष्टि गोचर होमऽ लगैत अछि। नदी, निर्झर, पर्वत-शृंखला, वन-प्रान्तर सभ प्रकृतिक एहि परिवर्तन सँ प्रभावित होइत रहैछ। हेमन्त ऋतु मे पर्वतमाला हिमाच्छादित रहैछ तँ शिशिर मे वृक्ष पत्र-विहीन भऽ जाइछ—वसन्त मे दिगदिगन्त रसाल-सौरभ सँ आपूरित भऽ उठैछ! अतः काव्य मे षड्-ऋतु वर्णन महत्त्व बड़ बेसी अछि।

प्राकृत ओ अपभ्रंश मे षड्ऋतु परम्पराक संग बारहमासाक परम्परा से उपलब्ध होइत अछि। अपभ्रंश युगक समाप्तिक बाद आधुनिक भारतीय भाषा मे षड् ऋतु सँ अधिक 'बारहमासा' विशेष लोक-प्रिय रहल। लोक-साहित्य मे प्रकृतिक परिवर्त्तनशील रूपक वर्णन प्रचुर मात्रा मे पाओल जाइत अछि। ग्राम्य-जनक क्रिया-कलाप प्रकृतिक 'परिवर्त्तन सँ संचालित होइत रहैत अछि। एखनो विभिन्न जनपद मे 'बारहमासा' बहुजनप्रिय लोकगीत मानल जाइत अछि। हमरा जनैत साहित्यिक परम्परा मे षड् ऋतु

वर्णन छल आ लोक-काव्यक परम्परा मे 'बारहमासा' वर्णन। हमर विश्वास अछि जे प्राकृते युग मे लोक काव्यक परम्परासँ बारहमासा वर्णन शिष्ट-काव्य-परम्परा मे प्रवेश कैलक।

षड़् ऋतु आ बारहमासा वर्णन नायक-नायिकाक भावना केँ उद्दीपित करक हेतु कयल जाइत छल। साधारणतः काव्य मे षड़् ऋतुक वर्णन संयोग-शृङ्गार मे तथा बारहमासाक वर्णन विप्रलम्भ शृङ्गार मे होइत छल। मैथिली-काव्य-परम्परा मे बारहमासाक संख्या बड़ बेसी अछि। एकरा संगहि छौमासा ओ चौमासाक विकास सेहो भेल। एहि मे विभिन्न प्रकारक रचना शैलीक ओ छन्दक आविर्भाव भेल। सभ भेल, किन्तु एक वस्तुक अभाव रहल—मासक विस्तृत चित्रणक उपलब्धि नहि भऽ सकल। कवि लोकनि वर्षक विभिन्न मासक प्राकृतिक रूपक सांगोपांग चित्र देबा मे असमर्थ रहलाह। एक वा दू पंक्ति मे मासक प्रसिद्ध विशेषता दऽ नायिकाक विरह-जन्य निराशा, दुख, वेदनाक चित्रण कऽ देल गेल अछि। ई आरोप मैथिलीए कवि पर लगायब अनुचित हैत, कारण मध्यकालीनो काव्य मे जे बारहमासाक-रचनाक परम्परा छल, ताहू मे उपर्युक्ते रचना-विधान अछि। बारहमासाक उद्देश्य प्रकृति-चित्रण नहि रहि, नायिकाक विरहावधिक दीर्घता-सूचन मात्र रहि गेल।

षड् ऋतुक सम्बन्ध मे एक बात कहब आवश्यक अछि। यास्काचार्य निरुक्त अ० ४ पाद ४ खण्ड २७, संवत्सर निर्वचन प्रकरण मे कहैत छथि :—

'त्र्यतुः संवत्सरो ग्रीष्मो वर्षा हेमन्त इति'

तीन ऋतुकअन्तर्गत वारहो मासक अभिनिवेशक व्याख्या करैत लिखैत छथि :—

तपस्याद्याश्चत्वारो मासाः ग्रीष्मर्तुः
शुच्याद्याश्चत्वारो मासाः वर्षर्तुः
कार्त्तिकाद्याश्चत्वारो मासाः हेमन्त इति'

स्थूल दृष्टिएँ देखला सन्ता गर्मी, वर्षा जाड़ येह तीन ऋतु स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि ।

पुनश्च :—

पञ्चारे चक्रे परिवर्त्तमान इति
(ऋ० सं० २-३-१६-३)

एहि मन्त्रक अनुसार पाँच ऋतु भेल।

पञ्चर्तवः संवत्सरस्येति ब्राह्मणम्

हेमन्त शिशिरयोः समासेन' हेमन्त तथा शिशिर केँ एक मानि कऽ आ एक मन्त्र आरो भेटैत अछि :—

पञ्च पादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्।
अथे मे अन्य उपरे विचक्षणे सप्त चक्रे षडर आहुरर्पितम् ॥
(ऋ० सं० २-३-१६-२)

एवं क्रमें ऋतुक वर्णन भेटैत अछि। वर्ष मे बारह मास होइत छैक—एक ऋतुक दुइ मास निर्धारित अछि। साओन-भादब-वर्षा, आसिन कातिक शरत्; अगहन-पूस-हेमन्त; माघ-फागुन-शिशिर; चैत-वैसाख-वसन्त तथा जेठ-अखाढ़—ग्रीष्म। जाहि स्थान ओ काल मे ऋतु-विभाजन भेल तकरा हेतु ई ठीक रहितो, एखन ई विभाजन युक्ति युक्त प्रतीत नहि होइत अछि। भारतक आन कोनो भाग मे यदि उपर्युक्त रूपें ऋतुक निर्धारण मिलितो हैत तँ मिथिला मे कम सँ कम तकर अभाव देखल जाइत अछि। साधारणतः हमरा बूझि पड़ल अछि जेना ऋतु सभ अपन निर्धारित समय सँ किछु पहिनहि प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। कोनो ऋतुक लक्षण किछु सप्ताहे धरि भेटैत अछि। कोनो कोनो ऋतु अपन प्राचीन निर्धारित मासक अयबा सँ पहिनहि समाप्त भऽ जाइछ। उदाहरणार्थ वसन्त ऋतुक समय अछि चैत-बैसाख—'वसन्तौ मधु माधवौ'। किन्तु हमरा लोकनि देखैत छी जे चैत बैसाख मे ग्रीष्म ऋतु विराजमान रहैत अछि आ तें चैतक सम्बन्ध मे हमरा कहऽ पड़ल अछि :—

ऋतुपति सँ पौने छह तोँही
यद्यपि आइ स्वराज
किन्तु ग्रीष्म सँ आतङ्कित अछि

बुझनिक सभक समाज
वन उपबन मे सुमन सुमन सँ
नव उल्लास विंलायल
कहबालय ऋतुराज किन्तु
ई सद्यः ग्रीष्म तुलायल

विभिन्न मासक प्राकृतिक परिस्थितिक सतर्क दृष्टिञे अध्ययन कैलाक कारणें अनेक ठाम परम्परा सँ विभिन्न वर्णन हमरा करऽ पड़ल अछि। संगहि हमरा एहन बूझि पड़ल जेना प्रत्येक मासक अपन स्वतंत्र व्यक्तित्व छैक। प्रकृति-वर्णनक भारतीय ओ मैथिल परम्परा मे 'ऋतुप्रिया'क की स्थान हैबाक चाही, से तँ सुधी समाजे निर्णय करत।

एहि सँ अतिरिक्त जे किछु कहबाक अछि से अपन स्थितिक प्रसंग, अपन प्रवृत्तिक प्रसङ्ग एवं अपन प्रेरणा-स्रोतक प्रसङ्ग आ थोड़ बहुत मैथिलीक वर्त्तमान स्थितिक प्रसङ्ग।

आइ मैथिलीओ क्षेत्र मे लिखनिहार लोकक संख्या थोड़ नहि अछि। लिखनिहारक अनुपात मे पढ़निहारेक संख्या असन्तोष-प्रद अछि जे साहित्यक पूर्ण विकास मे बड़ पैघ बाधक भऽ रहल अछि। से देखितो पढ़ब छोड़ि हमहूँ लिख-निहारक पाँती मे आबि बैसि जैबाक हेतु उन्मुख भेलहुँ, तँ से मनोरंजनक दृष्टिएँ अथवा स्वान्तः सुखाय नहि, एक विशेष उद्देश्य बाध्य कैलक।

जे कोनो समृद्ध साहित्य आइ देखि पड़ैत अछि ओहि साहित्यक पाठकके अपना भाषा-साहित्यक प्रति प्रेमक संग एक गौरवक बोध रहैत छैक। मैथिली-क्षेत्र मे ओहि प्रेम एवं गौरब दिस रुचि उत्पन्न करबाक काज बड़ अल्प भेल अछि।

एहि दिशा मे आधुनिक युगक सबसँ श्रेष्ठ क्रान्ति-द्रष्टा हम कवीश्वर चन्दा झा कें मानैत छिऐनि। हुनको नाम 'चन्द्रनाथ' छलनि। ई नाम-साम्य हमरा कवि-कर्मक प्रेरणा देलक। तें हम अपना के कवीश्वरक सब सँ पैघ ऋणी मानैत छी।

पूज्य बड़का भाइ (राज पण्डित श्री बलदेव मिश्र) चन्द्र पद्यावलीक सम्पादन कऽ राज प्रेस सँ मुद्रित करौलनि। ओहि मे संकलित गीत सभक प्रचार बड़ तीव्र गतिएँ आरम्भ भेल! हमरो कण्ठ मे पचीस-पचास गीत आबि बसि गेल, जखन हम केवल नौ-दस वर्षक छलहुँ। अनुपनीते छलहुँ, अपना पिताक (स्व० प० मुक्तिनाथ मिश्र, प्राचार्य, महारानी अधिरानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय राज दरभङ्गा) अनवरत पूजा पाठमय वातावरण मे पालल जाइत छलहुँ तें स्वतः पूजा पाठक प्रति बेसी आस्था छल, अथवा अछिओ, किन्तु अनुपनीत रहलाक कारणें पार्थिव-शिव-लिंगक पूजा मात्र करबाक अधिकार

प्राप्त छल, से सायंकाल बड़े उत्साह ओ विन्यास सँ करैत छलहुँ आ ओही ठाम बेस टोप टहंकार सँ गाबऽ लगैत छलहुँ— 'शिव जाउ कतँ, शरण धयल हम बड़ विपतै, 'शिव निन्दा जनु रटुवट्ठ कट्ठ लगइत अछि कान' 'सुनह हमर हित बतिया हे गौरी' आदि, आ तकरा बाबूजी बड़े प्रेम सँ सुनैत छलाह, संगहिं कखनहुँ कऽ कवीश्वरक चमत्कृत प्रतिभाक वर्णन कऽ सुनबितो छलाह।

चारि-पाँच वर्ष सँ गबैत अबैत छलहुँ कोनो विशेष बात नहि छल। एतेक दिनुक बाद जखन पद सभक किछु अर्थो बूझऽ लगलिऐक तँ अकस्मात् एक दिन भनिता पर ध्यान गेल—भन कवि 'चन्द्र' हमर करनी गुनि क्यो नहि देत शरण अनतै'—तखन मोन मे भेल जे एहन नाम गीतक भनिता मे बेस चुट दऽ बैसि जाइत छैक—'सुयश चन्द्र बापक देवी राखह, वन तजि जाह वसतिया' जँ हमहुँ गीत बनाबी तँ भनिता मे नाम खूब बैसत।

तखन जे चेष्टा आरम्भ कैलहुँ तँ नचारी, महेशवाणी सँ हिन्दी क भजन कीर्त्तनक बाध बोन टपैत नवका युगक बाट धरि पहुँचलहुँ, जाहि मे प० श्री कामेश्वर झा 'कुसुम' हमर पथ-प्रदर्शक भेलाह आ वैह स्व० अच्युतानन्द दत्त, आदरणीय

श्रीसुमन जी, श्रीमधुप जी ओ श्रीयात्री जी सँ परिचय करौलनि। मिथिला मिहिर ओ बालक मे मैथिली तथा हिन्दीक कविता प्रकाशित भेल। एहि प्रकारक प्रवृत्ति रखनिहार छात्र लोकनिक एक संगठन कैलहुँ छात्र संघ नामे, जे बाद मे नवरत्न-गोष्ठी नामेँ एक साहित्यिक संस्थाक रूप धारण कैलक, जाहि मे सब सँ प्रतिभाक धनी छलाह दोस्त (प० श्री मथुरानन्द चौधरी 'माथुर')। ओहि नवरत्न-गोष्ठीक दिस सँ क्रमहि बारह गोट पोथी प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

तँ १९४० सँ आरब्ध विकास यात्राक क्रम मे १९४६ मे हम गुद-गुदी कविता संग्रह लऽ मैथिली पाठकक सोझाँ उपस्थित भेलहुँ। एहि सँ पूर्व १९४१ सँ कवि सम्मेलन क मंच सँ चश्मा, अल्हुआष्टक, मन्त्री आदि कविता श्रोता लोकनि प्रेम सँ सुनैत रहलाह आ प्रोत्साहित करैत रहलाह।

१९४५ ई० मे व्याकरणक आचार्य परीक्षा समाप्त कैलाक बाद जीवन उद्देश्यक प्रसंग सोचब आवश्यक भऽ गेल छल। १६४६ मे संयोग सँ मैथिली साहित्य परिषद्क मधुबनी अधिवेशन मे हम उपमन्त्री निर्वाचित भेल हुँ, जखन परिषद्क अध्यक्ष छलाह श्रद्धेय प० श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्र जी। परिषद्क कार्य करैत मैथिलीक बहुत समस्या सभक

ज्ञान भेल आ मैथिलीएक प्रचार प्रसार करब जीवनक उद्देश्य बना लेल ।

गुद–गुदी मे संकलित मन्त्री, सम्पादक, अध्यापक, प्रोफेसर, ओकील आदि कविताक लोक–प्रियता हमरा हास्य-रसक कवि बना देलक । परिणामतः कवि–सम्मेलनक मंचपर हमर हास्यरचना छोड़ि आन रचना सुनबाक हेतु लोक प्रस्तुते नहि छल ।

१९४८ मे आदरणीय श्री सुमन जी 'स्वदेश' मासिक-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ कैलनि तँ छन्द मे किछु व्यंग्य–प्रधान रचानक भार देलनि । तखन हम युग-चक्रक रचना आरंभ कैलहुँ, जकर प्रथम कविता–'जग कें युग परतारि रहल अछि' सर्व प्रथम स्व० विद्वद्वरेण्य पं० त्रिलोकनाथमिश्र जी कें सुनौलिऐनि । ओ मुक्त कण्ठें एकर प्रशंसा कैलनि । ओहि काल मे तँ येह बूझि पड़ल जे अधिक सहृदय लोक छथि तें प्रोत्साहनक बुद्धिएँ एतेक कहलनि अछि, किन्तु जखन प्रो० श्री रमानाथझा जी, प्रो० श्रीजयदेवमिश्र जी आदि आलोचक लोकनि सेहो एहि रचनाक चर्चा कैलनि तँ थोड़ेक सन्तोष भेल । युगचक्रक किछु पंक्ति जखन बिहार सरकारक मन्त्रि–वर्गोक कण्ठ मे देखल तँ आरो उत्साहित भेलहुँ । बाद मे आबि

युग-चक्र नामें दोसर कविता संग्रह पाकेट संस्करण प्रकाशित कैलहुँ ।

परिणामतः हास्य ओ व्यंग्य हमर मुख्य धारा भेल, जकर उल्लेख मैथिलीक इतिहास अथवा आनो आलोचनात्मक निबन्ध मे यत्र-तत्र कैल गेल ।

एहि बीच श्रद्धेय महाकवि श्री सीताराम झा जीक दर्शन होइत रहल आ स्नेह सँ ओ रचना सब सुनैत रहलाह ! एक बेर ओर आषाढ़ सुनलनि तँ बड़ प्रसन्न भेलाह आ परामर्श देलनि जे एहिना सब मास पर लिखि जाइ तँ अनायास प्रकृति वर्णन वा ऋतु-वर्णन लिखि लेब । हम अगहन ओ आसिन लिखने छलहुँ हेँ । महाकविएक प्रेरणा सँ आनो आनो मास पर लिखबाक हेतु सयत्न भेलहुँ । एतवा अवश्य जे जाहि मासक वर्णन लिखलहुँ से ओही मास मे, आन मास मे नहि ।

१९४७ मे १० अगस्त कऽ श्रद्धेय श्री जयदेव मिश्रजीक स्नेहानुवृत्तिएँ एवं श्री सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवालक साहित्यक प्रति सहज अनुरागक कारणेँ महारानी लक्ष्मीवती एकेडमी मे मैथिली अध्यापकक पदपर हमर नियुक्ति भेल । 'जे रोगीकेँ भावै से वैद फरमावै' लोकोक्ति चरितार्थ भेल ।

एक अध्यापकक पुत्र केँ यदि अध्यापन वृत्ति भेटि गेल तँ

बेजाय नहि कहक चाही, ताहू मे मैथिलीक कृपा सँ ओही विषयक अध्यापन जे अभीष्ट हो। हम तहिया सं अपना कें एक अध्यापक बनैबाक चेष्टा मे लागि गेलहुँ। एहि विश्वासक संग जे छात्रक हृदय मे जावत मातृभाषाक प्रति प्रेम नहि जगतैक तावत मैथिलीक उद्धारक हेतु अपेक्षित जनबल संगठित नहि भऽ सकैछ। हमर पहिल छात्र दलक नेता छलाह श्री राधानन्दन झा, जे बाद मे मैथिलीमे एम० ए० कऽ एम्० एल्०ए० भेलाह।

एहि रूपेँ कर्म-क्षेत्र मे प्रवेश कैलाक बाद अन्तः संघर्षक भान किछु सेहो भेल।

मैथिली कें पाठ्य-क्रम मे स्थान भेटि गेलाक बाद ओकर समुचित विकासकजे उचित प्रयत्न आवश्यक छल, ठीक तकर प्रतिकूल कैल गेल। पाठ्य-ग्रन्थो मे उदार दृष्टि नहि राखल गेल।

जेना काँग्रेस देशक स्वाधीनताक हेतु त्याग, तपस्या ओ संघर्ष कयलक आ स्वाधीनता प्राप्तिक बाद लगले ओहि त्याग ओ तपस्याक पुरस्कार चाहऽ लागल,—आङुरे पर गनल-गूथल लोक एहि लोभक संवरण कऽ सकलाह-तहिना मैथिली क्षेत्र मे परिलक्षित होमऽ लागल। कांग्रेसो मे असलका त्यागी-तपस्वी सब मुँह तकिते रहि गेलाह आ—

'लुरिगर सब भरि मोन उठौलक
किछु खैलक किछु भार पठौलक'

तहिना मैथिलीक असल सेवा कैनिहार लुलुआयले रहलाह। उचित योग्यता ओ प्रतिभाक उपेक्षे टा नहि भेल, अपितु अयोग्य एवं साधारण प्रतिभाक लोक प्रमाणित करबाक कुत्सित चेष्टा आरम्भ भेल।

ओमहर एक दिस रेडियो, सिनेमा, दैनिक-पत्र ओ विभिन्न नेता लोकनिक भीषण भाषण मस्तिष्क पर हथौड़ा मारत, दोसर दिस मैथिली केँ गीड़ि लेबाक राजनीतिक चक्रचालि, ओहि चक्रचालि केँ फलीभूत करबाक हेतु साहित्य-महारथी सभक षड़यन्त्र चलैत, कतेक अघासुर बकासुर मैथिली केँ उदरसात् करबाक हेतु उद्यत आ एमहर एकरा आरो संकीर्ण बना देबाक अदूरदर्शितापूर्ण काज। जखन आवश्यकता छल सबकेँ समेटबाक तखन एतय भाषाक कुल, मूल, उतेढ़क आधार पर छँटनी होइत। एवं क्रमेँ बाह्य ओ अन्तः संघर्षक बीच चलैत रहलहुँ।

बाह्य संघर्षक अन्त करबाक चेष्टा मे विद्यापति गोष्ठीक जन्म भेलैक जाहि माध्यम सँ विद्यापतिक जन्मभूमि, सिद्धि-भूमि ओ समाधि-भूमिक यात्रा करैत गेलहुँ। समाधि-भूमिक

नाम परिवर्त्तनक प्रथम प्रस्ताव एही गोष्ठी द्वारा उपस्थित कैल गेल छल, बाद मे अनेक अन्य संस्था सँ सेहो दोहराओल गेल आ फलतः वाजोदपुर आब विद्यापति नगर नामें अंकित अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहास मे ई युग अवश्य उल्लेखनीय युग गनल जैत। कारण अन्तः ओ बाह्य संघर्ष ओ विरोध रहितो एकर साहित्य उन्मुख रहल। एकावली परिणय, अम्बचरित, सुभद्राहरण, रमेश्वर चरित रामायण, रावण बध आदि महाकाव्यक प्रकाशन भऽ सकल। एहि युग मे मातृ-भाषाक उत्थान-कामना सँ एकान्त साधना कैनिहार लोकक प्रादुर्भाव भेल, जकर प्रसादात् एतबो चेतना देखि रहल छी। अन्यथा जाहि प्रकारक पक्षपात आरम्भ अछि, जे कनेको स्वार्थ सँ प्रेरित व्यक्तिक संख्या यदि अधिक रहैत तँ ने जानि मैथिली साहित्य कतेक दशाब्द पाछाँ पड़ल रहि जाइत।

एक शिक्षकक रूप मे थोड़ बहुत मातृभाषाक सेवा करैत रहलहुँ अवश्य, किन्तु हम अपना कें पूर्ण शिक्षके मानैत छी, ५० प्रतिशत मे लेखक, कवि, नाटककार, अभिनेता, गायक, पत्रकार समाजसेवी तथा एक परिवारक सदस्य

क रूप मे पति, पिता, भाइ बन्धु, मित्र आदि सब किछु मानैत रहलहुँ अछि ।

मूल उद्देश्यक पूर्त्ति मे कखनहुँ कविताक रचना करऽ पड़ल, कखनहुँ नाटकक, कखनहुँ कथा लिखऽ पड़ल तँ कखनहुँ निबन्ध, कखनहुँ उपन्यास लिखऽ पड़ल तँ कखनहुँ लोक-गीत, कखनहुँ अभिनेताक रूप मे मंच पर उतरऽ पड़ल आ नृत्यक हेतु गीतक धुनि सब सिखबऽ पड़ल, नव नव प्रतिभाकेँ प्रोत्साहित करबाक हेतु पत्र पत्रिकाक समपदनकरऽ पड़ल तँ कखनहुँ पुस्तकक, कखनहुँ आकाश वाणी सँ कबिता पढ़लहुँ तँ कखनहुँ साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ राजनीतिक मंच सँ। एहि प्रकरण मे ने काँग्रेसक, मंच बूझल ने कम्युनिष्टक, ने स्त्रतंत्र पार्टीक ने जन संघक, ने प्रजा समाजवादीक ने सामाज-वादीक । जे जतऽ आह्वान कैलनि, ततऽ उपस्थित होइत रहलहुँ कखनहुँ स्वागत-गान आभिनन्दन-पत्र सेहो लिखलहुँ ।

किन्तु ई जे किछु करैत रहलहुँ अछि से कर्त्तव्य बुद्धिएँ, ने सामाजिक उपकारक बुद्धिएँ ने स्वार्थ-सिद्धिक बुद्धिएँ । हँऽ जँ स्वार्थ कही तँ एतवा अवश्य जे मैथिलीक चर्चा, मैथि-लीक अभ्युन्नति नीक लगैत अछि, सब सँ प्रिय यैह वस्तु अछि। आ अपना प्रियक हेतु लोक कतेक पैघ पैघ बलिदान

करैत आयल अछि, कयौ आसुरी, कयौ सात्विक। तेँ हम एहि कार्य सबकेँ परोपकारक नाम पर खपैबाक चेष्टा करब तँ से दम्भ मात्र कहल जैत।

छात्रक संख्या मे वृद्धिक हेतु अ० भा० मैथिली साहित्य परिषद क प्रचार मन्त्रीक रूप मे एक परिपत्र प्राचार्य ओ प्रधानाध्यापक क नाम आवेदन पत्र सहित छपवाय अभिभावक लोकनिक दुआरिएँ दुआरिएँ घुमलहुँ, अनो क्षेत्र मे परिपत्र पठौलहुँ, संघर्ष करऽ पड़ल, विरोध करऽ पड़ल, उपहास सहऽ पड़ल व्यंग्य सहय पड़ल, किन्तु आइ छात्रक संख्या मे दिनानुदिन बढ़ती देखि बन्धुवर कवि श्री आरसी प्रसाद सिंह जीक ई पाँती अनायास कण्ठ मे आबि जाइछ :—

'ई अदराक मेघ नहिं मानत रहत बरसिकैं'

५० प्रतिशत मे गनवैत गनवैत हम अपनाकेँ किछु प्रतिशत अभिनेता ओ गायक सेहो कहि देलहुँ जाहि सँ पाठक केँ थोड़ेक विस्मय भऽ सकैत छैनि, किन्तु बात किछु सत्ये थीक। जर्मनीक प्रसिद्धविद्वान डा० एडगर्टन जखन दरभंगा पहुँचल छलाह तँ वैदेही समिति द्वारा हुनक सम्मान मे व्यंग्य सम्राट प्रो० श्री हरिमोहन झा प्रणीत 'अयाची मिश्र एकांकी'क मंच कैल गेल छल, जाहि मे अयाची मिश्रक भूमिका मे हमरे उपस्थित होमऽ

पड़ल। तहिना १९५७ मे मैथिल संघ कलकत्ता द्वारा आयोजित विद्यापति स्मृति पर्वक अवसर पर श्री शेखर जीक संग स्वलिखित आधुनिक-पाठ्य-प्रणाली एकांकी ओ मूक-बधिर अभिनय मे सेहो अभिनेताक रूप मे उपस्थित होमऽ पड़ल छल।

प्रथम मैथिली लेखक सम्मेलनक अवसर पर बन्धुवर प० श्री रामकृष्ण झा 'किसुन' लिखित 'उगना रे मोर कतौ गेला' एकांकीक निर्देशकक रूप मे काज करऽ पड़ल तँ कृषक-नृत्य मे गीत गाबऽ पड़ल।

१९६१ क गणतन्त्र-दिवस-समारोहक अवसर पर दिल्ली मे आयोजित अखिल भारतीय लोक-नर्त्तक दलक प्रतियोगिता मे जे मैथिलीक लोक-नृत्य प्रथम भेल, ओहि गीतक रचना ओ धुनि हमर कयल थिक। एहि लोक-नृत्य केँ सफल बनैबाक श्रेय संयुक्त-लोक-शिक्षा-निर्देशक श्री नवल प्रसाद गौड़ जी केँ, जे दलक नायक छलाह, बन्धुवर श्री विश्वनाथ मिश्रजी केँ छनि। कहबाक आशय जे एहिना छिट फुट काज समय समय पर करबाक अवसर भेटल तेँ एक आध प्रतिशत अपन मोजर एहू रूप मे करा देल अछि। किन्तु समष्टि रूपेँ हम अपनाकेँ एक शिक्षक दोसर मातृभाषाक एक जागरूक प्रहरी मात्र मानैत छी।

एहि कार्यकाल मे जे कोनो नवीन प्रतिभाक व्यक्ति हमरा सम्पर्क मे अयलाह, तनिका लोकनिकें अपन योग्यता ओ क्षमताक अनुसार प्रोत्साहित करैत रहलिऐनि जाहि में चि० श्री मायानन्द मिश्र, श्री रामदेव झा, श्री विद्यानन्द 'किसलय' श्री अनन्त बिहारी 'इन्दु' श्री सोमदेव, श्री बाल गोविन्द लाल, श्री श्रीमन्त पाठक, श्री ब्रज भूषण झा 'भूषण' श्री इन्द्रनाथ झा, श्री फूलकान्त मिश्र, 'प्रशान्त' श्री उग्रनारायण मिश्र 'कनक' श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री रामनाथ मिश्र 'मिहिर' श्री अर्जुन कुमार 'अनल'' श्री आद्यानाथ झा 'निरंकुश' श्री मेधानाथ झा 'गुणी' श्री प्रभासकुमार चौधरी आदि अनेक प्रतिभा-सम्पन्न मातृभाषानुरागी दोसर पंक्ति मे ठाढ़ छथि जे अनवरत मैथिलीक सेवा मे संलग्न छथि।

आइ सँ केवल १५ वर्ष पूर्वक स्थितिक संग आजुक स्थितिक तुलना करैत छी तँ ततबा अन्तर देखि पड़ैत अछि जाहि सँ उज्ज्वल भविष्यक आभास भेटैत अछि।

मैथिलीक भंडार कें सर्वांग पूर्ण बनैबाक हेतु जाहि गतिएँ आइ निर्माणक आवश्यकता अछि, तदनुकूल वातावरणक सृष्टि एखनहुँ नहि भऽ सकल अछि ने तँ प्रकाशनेक ततेक सुविधा ने विज्ञापन क तेहन साधन तथापि बाबू श्री कृष्णनन्दन

सिंह जी द्वारा स्थापित 'हरिनन्दन सिंह' स्मारक निधि, मैथिली प्रकाशन कलकत्ता, विद्यापति प्रकाशन, ग्रन्थालय दरभंगा, वैदेही समिति, दरभंगा, तीरभुक्ति प्रकाशन, प्रयाग, विद्यापति गोष्ठी, नवरत्न गोष्ठी दरभंगा, चेतना समिति, पटना, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, बम्बई, कलकत्ता, लहेरिया सराय आदि संस्था विभिन्न रूप मे मैथिलीक अभ्युन्नति क हेतु कटिबद्ध अछि, जकरा देखैत हम अपनाकेँ प्रगतिशील नहि तँ अगतिशीलो नहि मानैत छी, यदि अपना गति सँ सन्तुष्ट नहि छी तँ हताश सेहो नहि।

अपना सँ पाछाँक पंक्ति मे अबैत छात्र-मण्डलक प्रबल सैन्य-शक्ति केँ देखि बहुत आशा होइत अछि। तखन रोपल धान केँ फुटबा मे ओ पकबा मे प्रकृति जे अपेक्षित समय लगबैत छैक, ततेक काल धरि तँ हमरो लोकनि केँ धैर्य राखहि पड़त, मुदा फेर श्री आरसी बाबूक शब्द मे कहब :—

"अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि,"
यैह थिक हमर कार्य-कलाप। एहि सँ हमर भावभूमिक जँ अनुमान लागि सकय तँ बेस।

आब एहि निष्कर्ष पर पाठक केँ पहुँचबा मे बेसी विलम्ब नहि हैबाक चाहिऐनि जे हम कवि एक आधे प्रतिशत छी।

तखन एहि संग्रह मे संकलित कविताक प्रसंग हम की कहि सकैत छी। तेँ हमरा एहि प्रसंग किछु वक्तव्य नहि अछि। जतबे अपने लोकनि केँ एहि मे नीक लागि जायत ततबे सँ हम अपना केँ कृतार्थ बूझब।

यदि एकरा पढ़लहुँ तँ ताहि सँ अपनेक मातृभाषाक प्रति प्रेम प्रमाणित भऽ गेल आ यैह अनुराग उत्पन्न करब हमर मूल उद्देश्य अछि।

तखन यदि पाठक हमरा निवेदन पर कनेको कृपा-दृष्टि देथि आ समाज मे मातृभाषाक प्रति निष्कपट अनुराग उत्पन्न करबाक पुण्य कार्य मे थोड़बो सहयोग करथि तँ ताहि सँ बढ़ि हमरा हेतु आनन्द ओ सुखक दोसर बात भइए ने सकैत अछि।

इत्यलम्

विनीत

श्री सुमन जयन्ती १९६३ श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'



ऋतु-प्रिया

आषाढ़

पावसक ई प्रथम-यौवन-दर्शनक दिन अछि तुलायल
नीरदक तेँ गाँथि माला साजि नव-आषाढ़ आयल

आइ उत्सुक प्राण-दीपक
स्नेह लै आकुल बनल अछि,
यक्षिणी अलका पुरी मे
यक्ष-मन संकुल बनल अछि,

कालिदासक विरहिणी
दिन गनथु आङुर पर निरन्तर
कृषक-कामिनि केर अन्तर मे—
मुदित शतदल फुलायल
नील-कमलक गाँथि माला साजि नव-आषाढ़ आयल

मसृर्ण दूर्वादिल विषादेँ
मलिन मुख, कृश-तन बनल छल,
झरकि झूर झमान ताड़क
ठाढ़ तरु निश्चल तनल छल,

ज्वलित रवि-कर-निकर सम्मुख
रूप धय पहुँचल अनल छल,
नभ निरखि नहि सहि सकल से
द्रवित दृग-जल झर झरायल

तरल नभ मे तरल लोचन भेल नव आषाढ़ आयल

देखि ग्रीष्मक ताप, पीड़ित
झड़ल जामुन झहरि झरझर,
हरित सस्मित आम सहजहिं
वेदना सँ भेल पीअर,

आबि किछु आवेश मे क्रोधेँ
अरुण-मुख विकल बड़हर,
आइ अवनिक अधर भीजल
चिर-पिपासा सँ सुखायल

नील-घट मे वियद् गंगाजल भरल आषाढ़ आयल

ग्रीष्म सँ सन्तप्त धरणी
धैर्य धय कैलनि तपस्या,
जीवनक संघर्ष मे समुचित
सभक सम्मुख समस्या,

देखि समयक गति विषम
प्रकृतिक विजय, अपने पराजय,
आइ लाजेँ लाल-मुख रवि
जाय सागर मे समायल

नील-नभ पर कृष्ण-पट दय साजि नव आषाढ़ आयल

कमलिनी-वन मे मुदित
भ्रमरी मधुर वीणा बजाबय,
आर्द्र थल आर्द्रा प्रसादेँ
कृषक मेघ मलार गाबय,

क्षितिज तट पर निरखि विहुँसल
विमल-इन्दु उघाड़ि घन-पट,
कुमुदिनी चौंकलि पुलिन पर
भ्रमर लम्पट अछि बन्हायल

नीरदक तेँ गाँथि माला साजि नव आषाढ़ आयल

२

झमकि-झमकि बरसि रहल पावस केर राति रे!
दिनकर-कर सँ प्रचण्ड
पौलक सब जन्तु दण्ड
सहि न सकल उषम ताप
उमड़ल नव घन घमण्ड
कृषक वृन्द कल्पना करैछ भाँति-भाँति रे!

ककर फुजल केश-पाश
ककर सजल मनाकाश
ककर अलस नयन मदिर
ककर रुचिर चन्द्र-हास?
छमकि छमकि छिटकि रहलि बिजुरी मद-माँति रे!

पहुँचल आषाढ़ आइ
आशा_ मन मे बताहि
ताहि बीच भावनाक
पसरि रहल मृदुल बाँहि
वसुधा पुनि पाबि सुधा हरित भरित काँति रे!

कालिदास केर यक्ष
पक्ष-हीन पड़ल कतहु
यक्षिणीक कंज-नयन
विरह-तरल गड़ल कतहु
गरल-पान करक हेतु बैसलि जी जाँति रे !

गरजि तरजि बरजि रहल
सिरजि रहल नवल सृष्टि
दिगदिगन्त फेकि रहल
पावस निज कुपित दृष्टि
मनहि मनहि उमकि रहल खेत मे जजाति रे !

अन्तर मे शुचि विचार-
केर उठय नव उजाहि
जाहि बीच चितिर-बितिर
दलित वर्ग केर आहि
त्राहि-त्राहि तदपि करय एक दीन जाति रे !
झमकि झमकि बरसि रहलि पावस केर राति रे !

—::०::—

साओन

आयल साओन मास सोहाओन
साजल जलधर-माला
तनने मेघक घोघ, गगन सँ
बिहुँसथि विजुरी बाला

हरिअर कोर पटोर पहिरि कय
छमकथि पावस रानी
चञ्चल मन मरमोसि रहल छथि
बड़ बड़ ज्ञानी मानी

अपन कलुषमय नील हृदय केँ
नभ घन-पट सँ झाँपय
शत शत व्रण तारावलि लखितहिं
कत खन भय सँ कापय

झूमि उठल कालिन्दी-तट पर
हरित कदम्बक पाँती
कन्दुक कुसुमक चौदिश गुन गुन
करय भ्रमर उत्पाती

घनश्यामक छवि श्याम मधुप
आ ई श्यामल घनमाला
देखि भ्रमहि नोरेँ भसिआइलि
सब विरहिनि व्रजबाला

वसुधा पीबि सुधा रभसइ छथि
किन्तु भसइ छथि राधा
जीवन मे सहजहिं संशय छनि
मरणहुँ आधा बाधा

तजि मर्यादा उछललि सरिता
छललि गेलि तेहि पापेँ
छिछिआइलि रन-वन भुतिआइलि
गलइछ तेहि सन्तापेँ

अनुखन सन सन सनन सनन सन
उपवन पवन झमारय
लहलह करइत लपटलि लतिका
तरु केँ जनु परतारय

चहकल विहगक दल खोंता मे
चहकल मेघक छाती
अपने करुण-कथा कहइत अछि
लिखि उज्जर वक-पाँती

उमड़ल पच्छिम घटा छटा लखि
नाचल मुदित कलापी
नदी नहरि-डाबर-सर उमड़ल
भरल कूप ओ वापी

पर्वत सन आकार बना घन
दमसि दमसि दमसाबय
दिगदिगन्त मे दिग्गज-दलकेँ
तमकि तमकि तमसाबय

मधुश्रावणी पाबि मुदित छथि
माँतलि कृषक किशोरी
दिन-रजनी के बान्हल संगहिं
ई घन प्रेमक डोरी

—:o:—

भादब

झक झक सौँसे बाध करय
आ' लुक-झुक खेतक आरि रे !
चकमक चानी पीटि देलक अछि
अबितहिं ई भदवारि रे !
घन घमण्ड घहरय, हिय हहरय
हरय मनक उल्लास ई
बिजुरि छटा छीनय छनछन मे
विरहिनि - मन - विश्वास ई
कड़कि उठय कड़का कापय मन
कण कण व्यापल त्रास ई
भय सँ आकुल भेल भयाओन
आयल भादब मास ई
बलिक डरेँ की इन्द्र कुलिशकेँ
रहला फेर सम्हारि रे !
की कठोर ऊषम केँ वर्षा
रहलि आइ ललकारि रे

बुन बुन बुन बुन मेघ करय
आ' गुन गुन पावस राग ई
झन झन झिंगुर झनकि रहल अछि
जागल बेङ्क भाग ई

गुनिधुनि गुनिधुनि मन करइत अछि
कर कर कुचरय काग ई
उन्मन मन मे जागि उठल अछि
सूतल चिर अनुराग ई

जनिक पिया परदेशी से धनि
बैसलि छथि मन मारि रे !
धह धह भीतर कोँढ़ जरइ छनि
बाहर अछि भदवारि रे !

डूबल खेत पथार, ढहल घर
बढ़ल मनक सन्ताप तेँ
नोर झोर मे सानलि बसुधा
करइछ आइ विलाप तेँ

कुहरि उठइ छथि जा कय दिनकर
अस्ताचल पर साँझ मे
चोर जकाँ घोँसिऐल रहइ छथि
दिन भरि मेघक माँझ मे

कखनहुँ कोधेँ लाल आँखिओ
दइ छथि आबि पसारि रे !
चतुर गृहस्थ मुदा अवसर पर
लइ छथि काज ससारि रे !

नदी-नहरि - नाला - डाबर - सर
उमड़ल अछि मद-माँति रे !
जनिकर बीया पड़ल खेत मे
हरिअर तनिके काँति रे !

कृषक-किशोरी मधुमय स्वर मे
गबइछ राग मलार रे !
क्षितिजक कोर पकड़ि धरणी केँ
करइछ मेघ दुलार रे !

धन भादब भू-भार हरण-हित
अवतरलाह मुरारि रे !
चौठी चानक पूजा कय सब
रहल कलंक बिसारि रे !

—::o::—

आसिन

आयल आसिन मास मनोरम
उमड़ल नव नव आश
अति मन्द मन्द बहि रहल पवन,
पवनक गति पर
हरिअर हरिअर
मृदु शस्य राशि अछि झूमि रहल
झुकि झुकि धरणिक पद चूमि रहल
से बूझि पड़य जे—
प्रकृति पहिरि
चट हरित वसन
लट पट चञ्चल
शंकित मन
पंकिल-पथ पर पद
बढ़ि रहल निरन्तर
क्रम पर क्रम चलि रहल
दूरतर प्रियतम घर
मुख अरुणिम-प्रभ

उमड़ल अन्तर मे मधुर मधुर आनन्दक पूर्वाभास
आयल आसिन मास मनोरम उमड़ल नवनव आश
जन पुलकित मन
कय श्रद्धा सँ पितरक तर्पण
पुनि भक्तिभाव सँ नत-शिर भय
माताक चरण पर कय अर्पण
किछु भाव-सुमन
गद्‌गद स्वर मे अछि गाबि रहल
स्वर-लहरी पर साकांक्ष श्रवण
उत्सुक लोचन
स्मृति-पट पर अंकित स्वर-नर्त्तन
क्यौ
'जयजय भैरवि असुर भयाउनि'
गाबि गाबि सुधि बिसरि अपन
दय ताल मधुर
अछि ठुमुकि ठुमुकि कय नाचि रहल
सुख पाबि रहल
प्रमुदित अगजग
शरदक निशि-छवि जगमग जगमग
पुलकित धरणी, विकसित शतदल
उल्लास भरल आकाश
आयल आसिन मास मनोरम उमड़ल नव नव आश
—:०:—

कातिक

आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम मास
कानि बैसलि कृषक कामिनि पड़लि पीड़ा फाँस

सुत विकल भूखें—
पिआसेँ रुग्ण पति बेहाल
रोग खीमा आबि गाड़ल
रूप धय विकराल

शरद सुमुखिक आँखि नोरेँ
अछि सजल भय गेल
तेँ तुषार - निपात व्याजेँ
तरल अछि आकाश

आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम मास

चन्द्रिका धवलित क्रमहिं
भय गेलि अतिशय क्षीण
दीपमाला साजि चाहय
पूर्त्ति विश्व प्रवीण

अश्रु-नेहक व्यथा - टेमी
जरय किन्तु न हाय
करय तम सँ पार
तारक - मालिका उपहास
आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम मास

नाचि सुकराती न बाँचत
ई अभागल सूप
जैत पीटल राति व्यर्थें
पाबि पर्व अनूप
छथि प्रतीक्षा मे बहिन
बैसलि न अयला भाइ
कोन परि छठि पूजि खेपब
लैत दीर्घ निसास
आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम मास

नित्य सुकुमारी कुमारी
लेसि आनथि दीप
नीपि कय तुलसीक चौरा
साँझ ताहि समीप

ई वरण करतीह गौरा
छाड़ि शिव, नहि आन
पूजि रहली, राखि मन मे
ई अटल विश्वास
आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम मास

अछि लोटायल हरितिमा
धरणिक सजल अछि कोर
आइ स्वाती आबि बरिसत
चातकक चित - चोर

पुनि पुरातन पुरुष तोड़थु
आब गहगट निन्न
शिशिर कम्पन मे प्रकृति
भय जैत छिन्ने भिन्न

व्यर्थ श्रम सब हैत निष्फल रहत सब आयास
आइ आयल दुखद कातिक विषम तेरहम मास

—::❀::—

अगहन

अगहनक अति सुखद सुन्दर मास

बाध मे लहलह करइ छल
धनपतिक सौभाग्य अविकल
छल जानिक मधु-सिक्त कोमल-
ओष्ठ, मुखरित हास

अगहनक अति सुखद सुन्दर मास

किल किला कय हँसि रहलि छलि
मधुर मिहिरक माँझ निश्चलि
चञ्चला श्री
शान्त सूतलि कोर मे वसुधाक
नील - पट पर खचित हीरा

चन्द्रिका बरखा करइ छलि सतत मानु सुधाक

डारि पर हेमन्त झूलय
सभक घर-घर पवन बूलय
हाथ लय मुरहीक मौनी
हँसय निर्धन बाल

जे बितौलक राति दिन सहि
अति दुखद कातिक सदश
ओ काल अति विकराल
तकर जीवन मे मुखर अछि हास
अगहनक अति सुखद सुन्दर मास

२

घनहन अगहन धनधन जीवन
झनझन बाजय धान
हाँसू हाथ कान्ह पर बहिङा
गावय मुदित किसान

भूखक धह-धह ज्वाला पजरल
कातिक विपति आबि सिर बजरल
बिसरल से दुख, पुलकित तनमन
सब जन एक समान
घनहन अगहन धन-धन जीवन
झन-झन बाजय धान

धन ऋतुराज हेमन्तक आङ्न
छीटल अछि घसि चानक चानन

सुरभित थल, प्रियगर लगइत छथि
तेँ दिनकर भगवान
घन हन अगहन धन-धन जीवन
झन-झन बाजय धान
शीतक कण नव दूबिक दल पर
अक्षत बनि लटकल चकमक कर

प्रकृति नटी दूर्वाक्षत लय
करइत छथि ककर चुमान
घनहन अगहन धन-धन जीवन
झन-झन बाजय धान

३

सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान
शून्य बाध, खरिहान शून्य अछि, शून्ये पड़ल दलान

हाँसू पड़ल बिभ्मायल मुरुछल
अवनिक नयन नोर कण छलकल

आइ न खोपड़ी सँ सुनि पड़इछ
मधुर पराती गान
सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान

गर्भहिं तुइल शीश सब धानक
जे बहरायल से मुख चानक

टक-टक तकइत, फक-फक करइत
तेजय अपन परान
सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान

स्वाती अबितहि पछबा रमकल
विपतिक घन में बिजुरी चमलक
ठामहिं ठमकल जे गमकल छल
लाल सतरिया धान
सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान

धरणिक छाती टूक-टूक अछि
मनक यथा तेँ मनहि मूक अछि
कोन चूक सँ हाथ ऊक लय
झरकाबथि भगवान
सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान

की भगवान आइ छथि सूतल
जठरानल मे जरइछ भूतल
करक पड़त प्रायः बरखो भरि
सबकेँ देव - उठान
सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान

आश छोड़ि बैसल अछि जनता
भावी केँ भगवाने जनता
बिजुली बम्मा सँ पटबय लय
कागत पर अछि 'प्लान'
सतावनक अगहन सबहक मुख कैलक आबि मलान

४

दुलुकि दुलकि चलय चालि लादल सिर बोझ रे !
झमकि जाय कृषक-वधू ताकि बाट सोझ रे !

मुकुलित मानस-सरोज
आन्दोलित युग उरोज

भड़कछ कसि बान्हल दुहु आँचर केर छोर रे !
गति - तरंग गङ्गा मे उछिलल हिलकोर रे !

पुरल सकल मनक आश
शशि-मुख पर प्रिय-प्रकाश

मन हुलास भरल देखि भरल पुरल चास रे !
भेटि गेल सिद्धि मेटि गेल सब पियास रे !

अयला जखने हेमन्त
भेल सकल दुखक अन्त

कन्त जकर तपल एहि हेतु चारि मास रे !
ताहि पहुक ध्यान-लीन धनिक श्वास-श्वास रे !

पहुँचल रवि क्षितिज-छोर
नगन गगन केर कोर

मगन मौलि श्री - समान ओलरल ई धान रे !
कोन भागमन्ति केर गाबि मधुर गान रे !

५

मधुर मिहिर झिहिर झिहिर बहय मृदु समीर रे !
सिहरि सिहरि जाय पुलक भरल लघु-शरीर रे !

'अन धन लछमी'क राज
बाध बोन मे विराज

साज बाज साजि धाजि चलल दल किसान रे !
सान सँ कटत धान मचल घमासान रे !

झलकि रहल सगर खेत
लाल, पीत, असित, श्वेत,

रंग ओ विरंग शीश लैत लहालोट रे !
झूमि झूमि काटि रहल पैघ और छोट रे !

झन झन झन स्वर-तरङ्ग
जन-मन मे नव-उमङ्ग

संग संग विरह-तान भरल स्वर - वितान रे !
मुखर दिशा, प्रखर निसाँ-मतल मन उतान रे !

हरल ककर ज्ञान प्रान
रहल ककर एक ध्यान

आसमान बीच उदित आइ पूर्ण चान रे !
कृषक वृन्द लादि चलल धान सिर-मचान रे !

—:::—

पूस

पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

हरखेँ मुदा विआहि लेलक अछि

दू दू टा बहु मूस

सोनक रङ मे बाघ रङल छल

सकल गृहस्थक मोन टङल छल

मनक कल्पना कोबर घर सन

रंग विरंगेँ रङल ढङल छल

कटल बाध, पलटल दुख दीनक,

दिन लगइछ मनहूस

पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

नार पड़ल नारायण तर मे,
गोनड़ि बनि गोविन्द उपर मे,
शिशिरक हिम - शर - विद्ध जनक
रक्षा करइत अछि सगर-नगर मे,

गनल-गुथल-जन ओढ़ि रहल छथि
शाल दोशाला धूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

दिनकर - कर - करवालेँ मुरुछल
प्राण त्याग करबा लय निहुँछल
शत-शत शत-दल, गलल सकल दल
नीर - भरल नयने दूर्बादल

अपलक देखि रहल पुनि पछबा
सिहकि तकर मुँह दूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

कोँढ़ बनल अजि केरा भालरि
जाड़ - ठार कैलक सबकेँ सरि
सिरसिरबय ई शिशिर अभागल
त्राहि त्राहि करइछ सब सबतरि

कैलक ई पैसाड़ सम्हरि कय
की कोठा, की फूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

मनहिं महाजन जोड़ि रहल छथि
तरि तिलकोड़ा तोड़ि रहल छथि
नरक जाय हित अपनहिं हाथेँ
बड़का खत्ता कोड़ि रहल छथि

लेब सवैया, उतरत ड्यौढ़ा
बौआ मुँह मे टूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

दिवस सुटुकि बनला दोहा सन
रातुक पेट बढ़ल कोहा सन
उदयाचल पर रविक दीप्त-मुख
लगइत छनि धीपल लोहा सन

रातुक पलरा लऽत भेल आ'
दिवसक पलरा भूस
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस

—::❀::—

माघ

धन्य माघ,
अः बाघक सोदर
यमराजक छह प्रबल दूत तोँ,
शिशिर पिशाचिनि
शिशु हेमन्त केँ काँचे खैलक,
तेँ तोहर साम्राज्य
आइ चारु दिस पसरल

अपना माइक कोखिक उज्ज्वल
धरती पर सरिपहुँ सपूत तोँ
धन्य माघ, अः बाधक सोदर
यमराज छह प्रबल दूत तोँ
ताहू मे ई पूरिबा पौलह
उमड़ल प्रलयक मेघ
घटा बनि चमकल बिजुरी रेखा
धन सम्पत्ति कहाँ के गनइछ
प्राणक करइछ लेखा

दुर्बल प्राणी गर्जन बुभुक्षक
तोँ धरि भैरव गौलह
सरिपहुँ तों सन्तावन पौलह
माघ,
थिका सब दिनुक घाघ तोँ
जे मरहन्ना अगहन पौलक
ढन ढन तकर बखारी
जाड़ेँ कपड़छ कोँढ़, ताहि पर
ई पुरिबा फौदारी ?
खन पुरिबा खन पछबा
कौखन धूआँ सन मुँह कैने
छारल बेस कुहेस, दिवस
अबइत छथि मुँह लटकौने
तोहर प्रबल - प्रताप,
तेज पुञ्जे ने रहथु दिवाकर
बुझि पड़ैत छथि किन्तु
उदित जनु नभ मे पूर्ण निशाकर
पन्द्रह दिन सँ धिया-पुता केँ
रौदक छैक सेहन्ता
माघ ! तोरा डर सँ सटकल छथि
बड़ बड़ आइ बजन्ता

जनता दिस सँ सात बेर
हे माघ, तोहर अभिनन्दन
बरफक बरखा !
तोँ भारत केँ आइ बनौलह लन्दन ?

तप्पत खिच्चड़ि खा खा जे कयौ
कोँढ़ अपन गरमौलक
सप्पत खा खा पुरिबा तोहर
तनिका पुनि धमकौलक

धरती सँ लय आसमान धरि
मेघक बुकनी छीटल
दूबिक मुँह पर बुझि पड़ैत अछि
अगबे मोती लटकल

बीच बाध मे ठोहि पाड़ि कय
कानय गहुम खेसाड़ी
चैती राहड़ि मे तँ सरिपहुँ
तोँ कैलह पैसाड़ी

भेल जुआनक मौअति
बूढ़क भितरी हाड़ गलौलह
धिया पुता सँ दाँत बजा कय
तोँ मुट्ठी बन्हबौलह
बूढ़ बड़द लय अपने दिस सँ
सुर - पुर - टिकट कटौलह
की गरीब गुरबा केँ पुछबइ
धनिकों केँ सटकौलह

एहन माघ कहिओ ने देखल
नार पोआर दहायल
अवनिक नोर धुआँ बनि सौँसे
अम्बर पर लहरायल

चान, सुरुज, तारा सब ओढ़ने
मेघक करिया सीरक
माघ मास करइत बुढ़िओ सब
मरती गंगा तीरक

बुद्धि - दायिका देवी वाणी तनिके शरण पकड़ने
बाँचत प्राण, चलत नहि ककरो एहि माघ सँ लड़ने

—:o:—

फागुन

आइ वसन्तक शुभागमन पर
नव अनुरागवती बनी धरणी
रभसि-रभसि किछु गाबि रहलि अछि

प्रकृति नटी उपवन आङ्न मे
नव - द्रुम - दल,
नव मञ्जरि, नव-नव मुकुल
वृन्त पर साजि रहलि अछि

की रसाल - वन सँ कोकिल
मैथिल कोकिल कवि कण्ठहार केर
कण्ठहार शिव सिंहक नृपक
लखिमाक स्वरेँ करइछ सकरुण आह्वान ?

कौशिकी कमला सँ विध्वस्त
पड़लि छथि शिथिला मिथिला खिन्न
यदपि अछि देश आइ स्वाधीन
तदपि अँह विनु जन पौरुष - हीन
चलथु संगहि अभिनव जयदेव
चढ़ाबय सब पर अभिनव रंग,
जगाबय सबमे नवल उमंग
अत :—
कू - कू कहि कोकिल दोग-दाग सँ
हुनके आइ बजाय रहल अछि ?

यक्षिणीक भ्रम सँ मेघक दल
की सर मे मुकुलित-शत-सरसिज-
पर अलि बनि, गुनगुन किछु गबइत
प्रिय संवाद सुनाय रहल अछि ?

की किंशुक दल अगणित, शोषित,
दलित मानवक उर - अन्तर मे
असन्तोष केर जरइत ज्वाला दिस
करइत संकेत
भविष्यक हेतु
शोषकक दल केँ किछु परचारि रहल अछि ?

वा कचनार कुसुम
धवलित तन
बाल्मीकिक आश्रम केर कविता
जनक - नन्दनी वैदेही केर
करुणा ओ सन्तोष मिलल
उच्छ्वासक बात जनाय रहल अछि ?

की प्रचण्ड पछबा
पश्चिम देशक पिशाच केर
पशु प्रवृत्ति पर
कसइछ व्यंग्यक बाण
बहय अगराय, उड़ाबय धूलि
करय नभ-मण्डल धरि केँ छन्न ?

पावसक पाबि सुखद वरदान
शरद् ज्योत्स्ना मे खूब नहाय
हेमन्तक आङन मे ओंघड़ाय
शिशिर मे जोगा - जोगा कय
प्राण सुरक्षित रखलक जे तृण-वर्ग
फागुनक बल - उमकी मे आइ
प्राण केँ देखि संकटापन्न
विकल मन सोचय दूबिक वंश—

"'सुनल ऋतुराजक भेल'छि राज
बहत आनन्दक मधुमय धार
आम्र - मञ्जरि सँ मधुरस आनि
पवन परसत घर-घर भरि मोन
रहत नहि हर्षक पारावार
मुदित भय नाचत भरि संसार
प्रकाशक रहत एक टा पुंज
रहत आलोकित
ग्राम-नगर घर-बाहर उपवन और निकुंज
बँचत नहि दीपक तरक अन्हार
मुदित भय नाचत भरि संसार
हैत सब दुख दारिद्रयक अन्त
पहुँचला जेँ ऋतुराज वसन्त''

प्राण केँ देखि संकटापन्न
विकल मन सोचय दूबिक वंश—

"मुदा ई कोन अभागक बात
दिवाकर बनि गेलाह चण्डांशु,
सुधाकर नहि रहलाह सुधांशु,
सरोवर मे नहि बाँचल वारि
कोना कय शतदल विकसित हैत,
कोना वन उपवन आब फुलैत

कतय सँ आनत मालाकार सुमन
जे गाँथत सुन्दर हार
कतय सँ धरती माता आनि
विश्व मे बँटती नव उपहार ?''

प्राण केँ देखि संकटापन्न
विकल मन सोचय दूबिक वंश—

''हमर तँ पद - मर्दित अछि जाति
जखन बड़के पर ई उत्पात
तखन छोटक के पूछत बात ?

भने भरि फागुन गाबौ गीत,
भने मस्ती मे काटौ काल,
मुदा आँखिक सोझेँ मे
नाचि रहल अछि
ग्रीष्मक रूप कराल
वसन्तक हैत प्रतिष्ठा अन्त
जरत भू-मण्डल पसरत ज्वाल''

—::o::—

चैत

चैत !
बनल मधुमास
बहुत दिन धरि
भरि पेट पुजौलह

बनि अग्रज माधवक
होइत बक
हंसक आदर पौलह

छथि वसन्त ऋतुराज
कविक वाणी सँ नित अभिनन्दित
कवि-कुल-गुरु श्री कालिदास सन
कविक कलम सँ वन्दित

जनिकर वर्णन करक हेतुएँ
आदि कविक मन डोलल
के कवि छथि जे हिनक हेतु
नहि भाव-कोष निज फोलल ?

वृन्दावनक निकुञ्ज मुदित
कालिन्दी - कूल विभोर
पाबि वसन्ते रास रचौलनि
नटवर नन्द किशोर

कवि कोकिलक काकली
कैलक जाहि वसन्तक अर्चा
जन्म, विवाह, सकल संस्कार
चुमाओन आदिक चर्चा

ताहि वसन्तक आङन तोँ
करबौलह पूजा नीमक
तोहर कृपेँ आइ पछबा केँ
चढ़लइ निसाँ हकीमक

अगते फागुन मे शिवशंकर
पाबि मनक अनुकूल
गौरी सन रानी, बन्धक मे
रखलनि अपन त्रिशूल

भय प्रसन्न लेपक हित तन मे
भस्मे दाम चुकौलह
ताही लय सनका पछबा कें
गामक गाम फुकौलह

एक शूल तँ सैह लोक कें
कटा रहल अछि काहि
दोसर शूल कतेको कें
पकड़ौने अछि शुलबाहि

तेसर शूल देखि दूरहि सँ
घबड़ैलाह विधाता
तोहरे घर मे टहल लगाबथि
आइ शीतला माता

रहि तोरे सङ ई पौलनि अछि
बूड़ि - वसन्त उपाधि
देखितहिं तोरा शिशिर बेचारी
धैलक अपन समाधि

पीपर, पाकड़ि मे तँ फलकल
नवका - नवका टुस्सा
आमक मज्जर कें मधुआ सँ
धरि कैलह भरकुस्सा

ऋतुपति सँ पौने छह तोँ हो
यद्यपि आइ स्वराज
किन्तु ग्रीष्म सँ आतङ्कित अछि
बुझनिक सभक समाज

कुहुकि कुहुकि कय कोइली रानी
कहुना राति गमाबथि
उन्मत-मन रन-वन दिन भरि फिरि
मधुपो मोन रमाबथि

वन–उपवन मे सुमन-सुमन सँ
नव उल्लास विलायल
कहबा लय ऋतुराज, किन्तु
ई सद्यः ग्रीष्म तुलायल

लागय सुन्न मसान बाध-वन
अकबक सभक परान
नेना सँ बुढ़बा धरि सबकेँ
कैलह चैत ! हरान

—:::—

वैशाख

धन्यमास वैशाख, शाख चढ़ि
कोकिल कुहुकि सुनाबय
नखशिख लाल शिरीष कुसुम
लग मधुकर गुनगुन गाबय

जड़ि सँ लय फुनगी धरि फलकल
फूलेँ फुलि फुलबाड़ी
फनफन फनकय पाबि प्रकृति सँ
ई बहुरंगी साड़ी

भेल तामसेँ ताम सनक मुँह
लाल जनिक से दिनकर
उगितहिं तपबथि सकल चराचर
जलचर, थलचर, नभचर,

सकल वियोगिनि श्री घनश्यामक
तपल वियोगक तापेँ
मनमोहन माधव बनि गेला
तोरे तापक पापेँ

बालारुण धरि ताप - ग्रस्त छथि
आनक कहब कथा की
ई अनन्त आकाश सुनावौ
अपना मनक व्यथा की

मधुक अनुज, बनि जेठक सटिया
डाहल लाखक लाख
तपल - तपन - भय ग्रीष्म बेचारा
सहजहिं मानय धाख

असल मास वैशाख जनिक
नन्दन छथि आइ अगन्न
जनिकर पौरुष देखि मुदा
कनइत अछि लोक हकन्न

रविक राजधानी परिवर्त्तन
जनिका भय सँ भेल
उठि पटना मानू गर्मी मे
चटपट राँची गेल

छथि चण्डांशु चलल उत्तर दिस
लय कैलाशक आश
जीवन लय गंगाजल - सेवन-
पर जनिका विश्वास

कैलाशो मे किन्तु ताप सँ
नीलकण्ठ बेहोश
अनुखन मस्तक पर जलधारेँ
बाँचक जनिक भरोस

हरिअर मृदु बेलपात अशन-
आसन जनिकर अछि भेल
तेसर आँखिक तेज अंश से
शिव हिनके दय देल

कोमल हृदय रसाल, जनिक
संयोगेँ भेल कठोर
नाङटि धरती, हलफ सुखायल
रहि - रहि चाटथि ठोर

नीमक आँखि हुलासेँ आन्हर
फूलेँ मातल डारि
साँझे बैसि पराती गाबथि
जन बैसक्खा ढारि

सकल नदी कृश-काय बनल अछि
जनु लङ्का मे सीता
सुरसरि धार सहित बुझि पड़इछ
उज्जर दप - दप फीता

पुण्य मास तैयो कहबइ छथि
से धरि नहि अन्याय
कारण, हिनके कोरा मे
अवतरली सीता माय

एही गुण सँ दोष सकल
हिनकर मानक थिक क्षम्य
शास्त्र पुराणो कहय—'मास
वैशाख थिकाह प्रणम्य

—:०:—

जेठ

धूलि धूसरित आठ दिशा
ओ धूमिल अछि आकाश
विधुआयल मुख विधुक
मलिन-अछि हुनकर – रुचिर - प्रकाश

वसुन्धराकेर छाती सहजहि
भेलनि खण्ड - पखण्ड
ताहू पर बघुआइ छला
दिन भरि प्रचण्ड मार्तण्ड

कर सँ बिद्ध, ज्वलित जठरानल —
मे सौँसे ब्रह्माण्ड
आइ जलधि घबड़ाय रहल छथि
ग्रीष्मक देखि कुकाण्ड

प्रलयङ्करक फुजल छल प्रायः
मूनल तेसर आँखि
मैना सब चुभकल पोखरि मे
फलका - फलका पाँखि

क्षुद्र नदी जलकोष रिक्त कय
झोंकय नभ पर धूरा
अग्निदेव से अपन फराके
पिजा रहल छथि छूरा

कमलक वन मे फूल पात की
नाल सहित जरि गेल
चिर दिन सँ सेवित जकरा सँ
से खग - दल चल गेल

सागर सन पोखरि मे जल बिनु
छट पट करइछ माँछ
बगुला गर मे आइ लगइ छइ
पोठी काँटक चाँछ

चटा रहल अछि ग्रीष्म ताप सँ
वड़ बड़ पैघ इनार
कते कूप - मण्डूकक बेड़ा
लागल स्वयं किनार

ठीक ठीक दुपपर मे बुझि -
पड़इत छल ई संसार
मुरही भूजक हेतु घिपौने
हो बुढ़िया कंसार

दिग दिगन्त मे वुझि पड़इत छल
पसरल धह - धह दावा
धूकि रहल हो जनु कदली-फल
प्रकृति लगा कय डाबा

नख-शिख अमलतास वन पीअर
पीअर भेल कदम्ब
ई रसाल वन एक लोक कें
अछि केवल अवलम्ब

दुपहर धरि पुरिबा, सन्ध्या धरि
पछबा ठनलक राड़ि
डुबला रवि तेँ स्तब्ध प्रकृति
अछि, पहुँचत आब बिहाड़ि

दूर क्षितिज पर कखनहुँ कय
विजुरी सखि कनखी मारि
उन्मन - मन केँ पहिने सँ की
रहले किछु परचारि ?

पाकत आम रोहिनिआ
हैत अवस्से बरखा हेठ
पलटत लोकक प्राण
आइ सँ चढ़ल मास ई जेठ



प्राप्ति स्थान :—

ग्रन्थालय, दरभंगा,

पाठक एण्ड सन्स, दरभंगा,

मिश्र टोला, दरभंगा